अणुव्रत आन्दोलन का 61वां स्थापना दिवस संपन्न

अभ्यास के द्वारा भीतर की चेतना को जगाएं

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 2 मार्च, 2009

''मनुश्य इन्द्रिय चेतना के धरातल पर जीता है और उसे प्रियता अधिक आऔष्ट करती है। प्रिय मिल जाए तो बहुत राजी होता है और प्रिय न मिले या प्रियता न हो तो नाराज हो जाता है। इस प्रियता की चेतना ने मनुष्य के चरित्र को भी विऔत बनाया है। भारतीय साहित्य में दो शब्द प्राचीन काल से चल रहे हैं 'प्रेय और श्रेय' अर्थात प्रिय और हित। एक परिपक्व चेतना वाला व्यक्ति जो प्रियता को महत्त्व नहीं देता वह हित को महत्त्व देता है कि हित है या नहीं है। मिठाई खाने में बहुत अच्छी लगती है। प्रिय है तो यह कचौरी, पकोड़ा, समोसा खाने में बहुत अच्छा लगता है पर हित नहीं है। आज इस प्रियता की चेतना ने व्यक्ति को, समाज को बीमार बनाया है, शरीर को भी बीमार बनाया है, मन को भी बीमार बनाया है और भावनाओं को भी बीमार बनाया है। अणुव्रत का एक प्रयत्न है कि व्यक्ति में हित की चेतना जागे। प्रियता की चेतना रहेगी, क्योंकि इन्द्रिय की चेतना जब तक काम करती है, प्रियता की चेतना रहेगी पर उसमें हित की चेतना जागे यानी प्रियता से आगे आध्यात्मिक चेतना जागे। भावात्मक चेतना जागे और शुद्ध भाव रहे।''

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में दो दिवसीय अणुव्रत आंदोलन के 61वें स्थापना दिवस के दूसरे दिन संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने एक प्रसंग का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा कि लाडनूं का प्रसंग है कि कुछ समणियों को मुनि दीक्षा में दीक्षित किया उनमें एक समणी जो बारह वर्ष तक समणी रही और विदेश यात्रा का प्रारंभ किया और बहुत विदेश यात्राएं कीं और फिर उसको मुनि दीक्षा दी गई वह है साध्वी विश्रुत विभा जो दीक्षा लेकर आई तो आचार्यवर ने पूछा कि इतने दिन समणी थी और अब साध्वी बन गई तुम्हारा लक्ष्य क्या है तो उन्होंने उत्तर दिया कि गुरुदेव अब मेरा लक्ष्य यही है कि अधिक से अधिक भाव विशुद्ध रहे। आचार्य तुलसी ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की, यानी भाव विशुद्ध है तो अनैतिकता आ नहीं सकती। भाव अशुद्ध बनता है तो आदमी केवल प्रियता के दलदल में फंसता है तब सारी अनैतिकता और विऔतियां आती हैं। प्रियता आदमी में है और एक छोटे बच्चे में भी है। एक छोटे बच्चे में प्रियता की चेतना हो तो आश्चर्य की बात नहीं किंतु एक बड़ा आदमी बन जाए और उसमें भी हित की चेतना न जागे तो आश्चर्य की बात है। प्रियता की चेतना संबंधों में भी अन्तर लाती है। आज के वातावरण में इन्द्रिय चेतना को खुलकर खेलने दे रहे हैं प्रियता नहीं है तो वहां एक पैर भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक प्रियता की चेतना को जागृत न कर सकें वर्तमान अच्छा नहीं होगा। बहुत सारी समस्याएं प्रियता की अति के कारण होती हैं।

यह पहले ही सोचें कि मैं जो आर्थिक घोटाला कर रहा हूं यह अच्छा तो लग रहा है पर इसमें मेरा हित है या नहीं तो शायद यह स्थिति नहीं बनेगी। जितनी बुराइयां हैं वह शायद इस कारण से हो रही हैं हम कैसे हित की चेतना को जगा सकें।

अणुव्रत के कार्यकर्त्ताओं के लिए आवश्यक है कि वे शिविरों की श्रृंखला आयोजित करें। जिस तरह अहिंसा प्रशिक्षण के शिविर लग रहे हैं, प्रशिक्षण हो रहा है वैसे अणुव्रत के प्रशिक्षण की बहुत जरूरत है। क्योंकि कोई भी बात केवल एक बात सुनने से नहीं आती। जब प्रशिक्षण होता है तो बात हृदयंगम बैठती है। प्रशिक्षण जरूरी है। केवल पढने से नहीं बदल सकते, हम अभ्यास के द्वारा भीतर की चेतना को जगाएं तो आदमी बदल सकता है।

इस अवसर पर 'अणुव्रत विचार क्रांति के छः दशक' पुस्तक के लोकार्पण हेतु अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल जैन गोलछा ने आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने अपने विचार व्यक्त किये। इसके अलावा डॉ. महेन्द्र कर्णावट, मगन जैन, संचय जैन, डॉ. नरेन्द्र शर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र नाथ अमन, डॉ. बी.एन. पाण्डेय, बंशीलाल पारस आदि ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर स्थानी अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चोथमल बोथरा, राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष भीखमचन्द नखत, राजलदेसर अहिंसा प्रशिक्षक शैलेन्द्र कुमार भी उपस्थित थे।

– अशोक सियोल

99829 03770